## दिनांक 31 दिसम्बर, 1985

सं ग्रो०वि०/यमुना/ग्रम्बाला/189-85/52647--चूंिक हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० के०एम० रवह इण्डस्ट्रीज, मोहडा, ग्रम्बाला, के श्रमिक श्री हरभजन सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है; ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं० 3(44)84-3-धम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्वाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उससे सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री हरभज़न सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि । श्रम्बाला | 178-85 | 52653.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं के के कि एण्ड कम्पनी, पंच कुला के श्रमिक श्री मदन लाल तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद। लिखित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब,-श्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के खण्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिमूचना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा, 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्याला, को विवादग्रस्त या उसरे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उससे सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री मदन लाल पुत्र चिन्द्रका प्रसाद की सेवाओं का सूमापन न्यायोचित तथा ठीक है, यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

## दिनांक 1 जनवरी, 1986

सं. श्रो.वि./रोहतक/131-85/26.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. मोहन सिपीनिंग मिल, रोहतक, के श्रीमिक श्री नानक चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्यौगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज़्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं.;

इसलिए, अव, औद्यौगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिध सूचना संख्या 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970, के साथ गठित सरकारी श्रिधिनियम की धारा 7 के अधीन 'गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री नानक चन्द, पुत्र श्री प्रहलाद सिंह की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि वि (रोहतक/33.—चूंकि हरियाणों के राज्यपाल की राये है कि मैं बी के एण्ड कम्पनी मार्फत एच एन जी एण्ड ई लि., बहादुरगढ़, के श्रमिक श्री रिवन्द्र कुमार तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इस के बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, अब, ब्रौद्योगिक विवाद ब्रिधिनियम 1947 की धार्रा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हिरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641—1—अम/78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायालय एवं पंचाट तींन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त सामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री रिवन्द्र कुमार की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? थिंद नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?